नेता लोग आजकल कुछ न कुछ कहते ही रहते हैं। उनकी कुछ बातें, कुछ फिकरे मशहूर हो जाते हैं उन्हीं पर सिलबिल के भतीजे गोवर्धन की टिप्पणी पढ़िए। हर नेता के बोल के साथ वह आवाज मिलाकर अपनी दीवानी आवाज बुलंद कर रहा है।

अब वक्त आ गया है जब सब कांग्रेसजनों को एक जगह इकट्ठे हो जाना चाहिये।

क्यों? लड्डू बटने वाले हैं कहीं?

भारत बचाओ

क्या मनोज कुमार बीमार चल रहा है आजकल?

मैं जनता पार्टी को बचाने के लिए कुछ भी करने को तैयार हूं।

तो फिर एक राख की टोकरी अपने पास हमेशा रखिये। जब भी राजनारायण बोलने के लिये मुँह खोले उसमें मुट्ठी भर राख डाल दीजिए।

जनता पार्टी टूट गई तो बाकी सब तो अपनी-अपनी पुरानी जगह जायेंगे। लेकिन हम जनसंघ वाले कहां जायेंगे? हमारे लिए कोई जगह नहीं रही।

जहन्नुम नाम की जगह के बारे में शायद आप भूल गये हैं।

राजनारायण से हमारे कोई मतभेद नहीं हैं। वह तो घर के सदस्य की तरह ही हैं।
आपने अपने घर में उन बेकार जोकरों के लिये अनाथाश्रम खोल रखा होगा। जिन्हें सर्कस में नौकरी नहीं मिली।
भारत की सारी अर्थव्यवस्था बीस बड़े औद्योगिक घरानों कब्जा हो गया है। उन्हें वि तरह हमें और बढ़ने से रोव है, उन्हें बांधना होगा।
जार्ज
रस्सी ले आउ
मैंने अपनी खोपड़ी रिसर्च के लिये आल इंडिया मेडिकल इंस्टीच्यूट वालों को दान दी है।
गलत एड्रेस पर दान दिया आपने। यह वस्तु तो आल इण्डिया गोबर गैस रिसर्च सैंटर को जानी चाहिए थी।
जनता पार्टी टूटेगी नहीं। वर्तमा संकट से और ज्यादा मजबूत औ निखर कर निकलेगी।
एक दूसरे पर कीचड़ उ का यह फायदा जरूर ब्यूटी पार्लरों में भी रंग नि के लिये मिट्टी का लेप जाता है।
अब चौधरी चरणसिंह पार्टी या सरकार में किसी पद के इच्छुक नहीं हैं।
खट्टे अंगूर वाली कहानी आपने पढ़ी है?
मनीराम बागड़ी
जो बीबी का नहीं वह देश का क्या?
जो बीड़ी का न सिगरेट का क्या?

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

सतीश एबट 'रीतू'—लुधियाना : कहते हैं जिन्दगी चार दिन की होती है। अगर कोई लड़की पांचवे दिन मिलने का वादा करे तो…?

उ० : भगवान के दरबार में अपील कीजिए, कि आजकल 'मीट्रिक प्रणाली' का युग है। 'सोलह आने' और 'एक दर्जन में बारह' का सिस्टम कब तक चलेगा। वह भी चार दिन की जिंदगी को दस दिन या पांच दिन की कर दे।

मोहन मिश्रा—शिलिगुड़ी—देशबन्धु पाड़ा : किसी के प्यार पर समाज क्यों जलता है ?

उ० : कमरतोड़ मंहगाई ने सबके चूल्हे ठंडे कर दिए हैं। अब समाज के जलने पर तो 'क्यों' मत पूछिए।

गुरमीत सिंह—पंजपीर, जालन्धर : कसमें, वादे, प्यार, वफा, रिश्ते, नाते, सब झूठे हैं तो फिर सच क्या है ?

उ० : हमारे और आपके बीच ना खाई हुई कस्में, न किये गए वादे।

कु० अलका बहरानी—बांसवाड़ा : आप हमारे प्रश्नों के उत्तर क्यों नहीं देते ? क्या इसमें कुछ विशेष पाठक ही भाग ले सकते हैं ?

उ० : हर पाठक भाग ले सकता है। शर्त केवल इतनी है कि प्रश्न में कुछ दीवानगी हो।

रोशन व्यास—इन्दौर : सुना है, गंजे लोग भाग्यवान होते हैं। क्या आप भी भाग्यवान हैं ?

उ० : पहले तो हमें आपके प्रश्न पर हंसी आई फिर इस बात पर रोना आया कि शायद आपको पता नहीं है, इस भाग्यवान नर की यह हालत कैसे हुई है।

दामोदर दरक—वर्धा : यदि आपकी पांच लाख की लाटरी निकल आए तो आप क्या करेंगे।

उ० : हम कुछ नहीं करेंगे, इसके बाद आप को इतना करना होगा कि हमें कंधों पर उठाकर श्मशान घाट तक ले जायें। क्यों जैसे ही लाटरी निकलेगी वैसे ही हमारा दम भी निकलेगा।

प्रहलाद जसवानी—मण्डला : चाचाजी महान मनुष्य की क्या पहचान है ?

उ० : इसे कहते हैं रात भर रामायण सुनी और सुबह उठकर पूछा रामचन्द्र जी औरत थे या मर्द। हमारी पहचान अब तक पता नहीं चली आपको ?

राजीव ढल 'मिक्की'—मुरादाबाद : डीयर अंकल, आजकल लड़के बाल बढ़ा रहे हैं और लड़कियां बाल कटा रही हैं, ऐसा क्यों ?

उ० : क्योंकि जब लड़कियों का पर्दा उठा तो हमने देखा लड़कों की अक्ल पर पर्दा पड़ गया है।

पवन खत्री, बैरागी—इन्दौर : इन्सान त्याग करने पर विवश कब हो जाता है ?

उ० : जब नया दीवाना स्टाल पर पड़ा हो और उसे देखने वाले की जेब में एक रुपया उछलने लगे।

दिनेश आर्य—रिवाड़ी : चाचा जी सुना है, चिल्ली ने अंगूठा नन्द को अपना पार्टनर बना लिया है ?

उ० : आपने ठीक सुना है। अब पता नहीं क्या होगा, क्योंकि शायद आपको पता नहीं, चिल्ली को अंगूठा चूमने की आदत है।

सैयद अब्दुल जब्बार 'मस्ताना'—बीकानेर : दिल्ली के सैलाब में क्या इस बार आप भी डूबे ?

उ० : पता नहीं आज तक कितनी बार डूबे हैं, इसके लिए सैलाब की जरूरत नहीं पड़ती। हमारे लिए तो चुल्लू भर पानी काफी होता है।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मण्डला : क्या आप खून पसीने की कमाई खाते हैं ?

उ० : हम तो कुछ भी नहीं खाते साहब ! खून पसीने की कमाई का गम हमें खाये जाता है।

सुरेश कुमार शर्मा—असम : मनुष्य बुरे काम क्यों करता है, यह जानते हुए भी कि इसका परिणाम बुरा निकलेगा ?

उ० : क्योंकि मनुष्य सब जानवारों में सबसे श्रेष्ठ सही, पर इस हिसाब से अब तक जानवर है।

केवल प्रकाश—काशीपुर : किस मौके पर अपने भाग्य की तारीफ करने को मन करता है ?

उ० : जब चुनाव हो रहे हों, और लोग कहें, चाहे कुत्ते को वोट दे देंगे। पर कांग्रेस को नहीं देंगे। और चुनाव के बाद पता चले कि लोगों ने 'हमें' वोट दिये हैं।

परमिन्दर सिंह, 'पिकम'—अमृतसर : आपने कितने वादे किये कि दीवानों को दीवाना समय पर मिलेगा। पर मिला नहीं क्या आपके वादे भी जनता पार्टी के वादे हैं ?

उ० : अब हम अपने वादे पूरे करके दिखा देंगे, क्योंकि हमें पता है कि हमने ऐसा न किया तो आप हमें कान से पकड़ लेंगे। पर उनका क्या इलाज है, जिनके कान लम्बे भी हैं। और उनके पकड़े जाने का डर भी नहीं है।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बाढ़ पीड़ित

और फिल्म स्टार

हर वर्ष की तरह फिल्म स्टारों ने दिल्ली हरयाणा, यू० पी०, बिहार तथा पश्चिमी बंगाल में बाढ़ से त्रस्त लोगों की सहायता के लिए जलूस निकालने का फैसला किया है। उन्होंने अपनी ओर से बाढ़ सहायता फंड में निम्न वस्तुयें देने की घोषणा की है।

सायरा अपने झड़े बाल बाढ़ पीड़ितों में वितरण के लिये देगी।

जीनत अमान पांच रुपये के पोस्टल आर्डर भेजने वाले बाढ़ पीड़ित व्यक्ति को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् में अपना पानी में भीगते हुए वाले पोज का कलर फोटो भेजेगी।

सुनीलदत्त अपने डाकू रोलों में चले हुए कारतूस के खोल बाढ़ पीड़ितों की सहायता कोष में देगा।

परवीन बॉबी ने निर्णय किया है कि वह कबीर के प्रेम-पत्र जला उनकी राख हैलीकॉप्टर से बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में गिराने के लिये देगी।

असरानी बाढ़ पीड़ितों की सहानुभूति में इस वर्ष अपनी बीबी को बर्थ डे पर कोई उपहार नहीं देगा।

देवानंद ने बाढ़ पीड़ितों को इस बात की प्रेरणा देने का निर्णय किया है कि इंसान के लिये असंभव कुछ नहीं है। इसके लिये वे अभी और २० वर्ष टीनेज हीरोइनों के साथ हीरो का रौल करते रहेंगे।

मौसमी चटर्जी बाढ़ पीड़ित सहायता कोष में अपने पति रीतेश को देने को विचार कर रही है।

अमिताभ कद लम्बा करने के उपकरण का विज्ञापन देंगे। ताकि लोगों में लम्बे होने का शौक बढ़े और बाढ़ आने पर वह न डूबें।
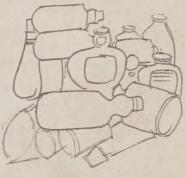
प्रेमनाथ बाढ़ पीड़ित क्षेत्र से आने वाले कबाड़ी को ही शराब की खाली बोतलें बेचेंगे।

अभिनेता डेविड ने बाढ़ पीड़ितों के लिए अपने सिर के बालों के बराबर सिक्के देने की घोषणा की है।

नीतूसिंह की ओर से नीतू की मम्मी बाढ़ पीड़ितों के लिये सिगरेट के टोटे देगी जो प्रोड्यूसर उनके ड्राइंगरूम में छोड़ जाते हैं।

जीतेन्द्र ने अपने अगले बच्चे का नाम बाढ़ से घिरे क्षेत्रों के किसी बच्चे के नाम पर रखने का फैसला किया है।

बन्द करो बकवास

नैना जो नैन से मिले हुआ यह मुझे क्या।

बन्द करो बकवास, तुम्हें कितनी बार कहा है कि शीशे में देख के हिप्नोटाइज़ करने की प्रेक्टिस मत किया करो।

लाखों तारे आसमान पर एक मगर ढूंढ़े न मिला

बन्द करो बकवास, मैं जानती हूं दूरबीन से तुम तारे नहीं लड़कियां देखते हो।

जाने जा मेरी कसम तुझको रुठ के तू न जा.....
FLIT

बन्द करो बकवास, तुमसे किसने कहा था कि हेयर स्प्रे की जगह गूंद भर के फ्लिट का डब्बा दो।
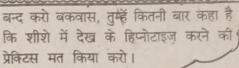
दशरथ को बम्बई में एक कम्पनी में इंजीनियर की नौकरी मिली थी। उसे रहने के लिये कम्पनी के मैनेजर ने अपनी कोठी 'रचना सदन' बहुत ही थोड़े किराये पर दे दी थी। वह कोठी वर्षों से खाली पड़ी थी। पास-पड़ौस के लोगों का कहना था कि उसमें कोई प्रेतात्मा रहती है

जब दशरथ कोठी में दाखिल हुआ तो लोगों ने उसे भी प्रेतात्मा वाली बात बताई। लेकिन दशरथ हिम्मत करके उसमें रहने लगा। दशरथ ने जैसे ही अपना सामान रखा एक लड़की वहां आई और उसने बताया कि मुझे मेरी बहन ने जो मैनेजर साहब के यहां काम करती है, आपके यहां घर का काम करने के लिये भेजा है। उसने वर्षों से गन्दी पड़ी कोठी को मिन्टों में साफ कर दिया तो दशरथ को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक दिन वह प्रेतात्मा दशरथ के सामने आई और उसे पिछले जन्म की कहानी सुनाने लगी—एक दिन स्कूल में एक नाटक हुआ था जिसमें हम दोनों ने पति-पत्नी का अभिनय किया था जो दर्शकों को ऐसा लगा कि वे हमें वास्तव में पति-पत्नी समझने लगे। तुम्हारे पिता मेरे पिता जी के यहां मुनीम थे। उसी रात उन्हें दिल का जबरदस्त दौरा पड़ा और डाक्टर ने उन्हें पूरी तरह से आराम करने को सलाह दी। मेरे पिता जी को मेरी शादी की चिन्ता थी और वे चाहते थे कि मेरी शादी ऐसी जगह हो जहां मुझे कोई दुःख न हो। इसलिए उन्होंने मुनीम जी से आपका हाथ मांग लिया। आपके पिता इसके लिए सहर्ष राजी हो गए क्योंकि मेरे पिता का सारा सामान दहेज में उन्हें मिल जायेगा क्योंकि मैं अपने पिता की इकलौती संतान थी। हमारी विधिवत शादी हुई लेकिन आप इससे खुश न थे। आप किसी और लड़की से प्रेम करते रहे। उस लड़की ने क्या चाल चली? आगे पढ़िये।

'अरे···जब लड़के को पत्नी ही पसन्द नहीं तो क्या वह रखेगी उसे? आज नहीं तो कल रचना उससे अलग हो ही जाएगी ···शायद तलाक मांग ले—।'

'हां—यह तो है।' ज्वाला प्रसाद ने चिन्ता भरे स्वर में कहा।

'अरे तुम्हें किशोरी का किस्सा नहीं पता? शादी के बाद गई—रात को पति सुहाग के कमरे में आया और पड़ के सो गया···और सवेरे ही किशोरी घर आकर बैठ गई और उसने तलाक भी ले लिया।'

'जानता हूं···लेकिन रचना तो बहुत दिनों से सह रही है।'

'पढ़ी-लिखी है इसीलिए इतने दिन धीरज कर गई···वरना कभी का छोड़ चुकी होती—औरत भूखी-नंगी रह सकती है लेकिन अपने मर्द की दूरी सहन नहीं कर सकती।'

ज्वाला प्रसाद कुछ देर तक सोचते रहे ···फिर धीरे से बोले—

'भगवान् बस जल्दी से तीनों लड़कियों की शादी करा दे···।'

'होश की दवा करो—बड़ी दो लड़कियों की शादी हुई भी तो अभी दो बरस तक और प्रतीक्षा करनी पड़ेगी रचना अब छः महीने भी नहीं टिकेगी।'

'फिर क्या करूं?'

'कुछ सोचो—।'

'एक ही उपाय सूझता है—।'

'क्या···?'

'जिस प्रकार ठाकुर साहब···'

कहते-कहते ज्वाला प्रसाद रुक गए और कौशल्या उछल पड़ी—

'क्या···रचना को भी ठिकाने लगा दोगे?'

'इसके सिवा कोई उपाय भी नहीं—कोई भी बहाना बनाया जा सकता है—फिर रचना की मौत के बाद तो सब कुछ दशरथ ही का है—दशरथ चाहे तो आराम से रानी को पत्नी बनाकर रख सकता है—फिर हमको भी अपने पुराने टूटे-फूटे मकान में नहीं जाना पड़ेगा।'

कौशल्या सन्नाटे में खड़ी रह गई थी।

किसी की चीख सुनकर रचना की आंख खुल गई···वह अपने बैड-रूम में ही थी···रात को दशरथ भी उसके कमरे में नहीं आया था। रचना ने उसे नौकरानी रानी के क्वार्टर से निकलते देखा था···और फिर न जाने कितनी रात तक वह कुर्सी पर अधलेटी-सी रोती रही···रोते-रोते ही उसकी आंख लग गई थी···

फिर अभी-अभी किसी की चीख सुन कर उसकी आंख खुली थी···साथ ही किसी के दौड़ते हुए पांव की आहटें गूंजी थी··· और फिर हाँपती हुई एक नौकरानी अन्दर आकर बोली···

'छोटी मालकिन···छोटी मालकिन··· मालिक···मालिक—।'

रचना हड़बड़ा कर खड़ी हो गई और बोली—

क्या हुआ डैडी को?'

फिर बिना नौकरानी के उत्तर की प्रतीक्षा किए वह बाहर निकली और तेजी से दौड़ती हुई नीचे उतरी—ठाकुर साहब के कमरे के द्वार के सामने ज्वाला प्रसाद, कौशल्या और दशरथ की तीनों बहनें खड़ी थीं—रचना बिना किसी की ओर देखे दौड़ती हुई अन्दर प्रविष्ट हुई—और ठाकुर साहब पर दृष्टि पड़ते ही वह ठिठक कर रुक गई।

ठाकुर साहब बिस्तर पर चित्त लेटे थे ···उनकी निर्जीव खुली हुई आंखें छत पर लगी थीं—रचना के कंठ से एक कंपकंपाती हुई चीख की आवाज निकली—

'डैडी—!!'

और दूसरे ही क्षण वह ठाकुर साहब की लाश पर गिरकर बच्चों के समान फूट-फूटकर रोने लगी।

रचना अपने कमरे में थी···रूपा भी उसके पास बैठी हुई थी। रचना की आंखें गहरी लाल थीं और पपोटे सूजे हुए थे और आंखों के नीचे काले गड्ढे से दिखाई देने लगे···होंठ सूखकर नीले-नीले हो गए थे। —रूपा उसे घूरे जा रही थी···फिर वह

क्रोधित स्वर में बोली—

'और तूने यह बात अपने डैडी से भी छिपाई और मुझ से भी ?'

'मैं कैसे बताती किसी को ?' रचना की आवाज भर्रा गई।

'इसका मतलब है अगर मैं तुझे सौगंध न देती तो तू आज भी कुछ न बताती···।'

'क्या करती बताकर ? मेरे भाग्य में जो कुछ लिखा है वह तो होकर ही रहेगा।'

'क्या बात करती है···भाग्य···भाग्य भाग्य···अरे भाग्य इन्सान अपने हाथों से बनाता-बिगाड़ता है—जो पति तेरा अपना नहीं है···जिसने अब तक तेरे साथ अजनबियों का-सा व्यवहार किया है उसके साथ तू कितने दिनों तक जीवन गुजार सकेगी ?'

'क्या मतलब ?'

'अरे···केवल फेरों का नाम ही तो शादी नहीं होता···पति-पत्नी के सम्बन्ध की और भी मांगें होती हैं—तू कहती है कि दशरथ किसी से प्यार करता है—तो फिर तू किस आस पर उसका साथ निवाह रही है ?'

'तू यह कहना चाहती है कि मैं उन्हें छोड़ दूं ?'

'और क्या···कुछ दिन बाद तू दूसरा घर बसा लेना।'

'नहीं···नहीं रूपा···यह असम्भव है।' मैंने तो उसी दिन उन्हें अपना सब कुछ मान लिया था जब मैंने अग्नि-कुण्ड के गिर्द उनके साथ फेरे ले लिए थे—वह मुझ से जितना दूर जाते हैं उतना ही उनके प्रति मेरे दिल में प्यार बढ़ता है—अगर मेरे भाग्य में उनका सामीप्य नहीं है तो ना सही···अगर मेरी लग्न सच्ची है···मेरा प्यार और मेरी तपस्या सच्ची है तो एक-न-एक दिन मैं उनको अवश्य पा लूंगी।'

एकाएक रूपा बाहर देखकर चौंक पड़ी···वह खिड़की के पास ही खड़ी थी···वह जल्दी से रचना की ओर देखकर बोली—

'इधर तो आ जल्दी से···।'

रचना उठकर खिड़की के पास आई ···रूपा ने पूछा—

'तू इसी नौकरानी के लिए कह रही थी ?'

'हाँ—यही है रानी।'

'और यह उसके साथ कौन मर्द है ?'

'इसका दूर के रिश्ते का भाई है—गूंगा और बहरा।'

'यह गूंगा बहरा है ?'

'हाँ—बिल्कुल।'

'मूर्ख···मैंने अभी दोनों को बातें करते सुना है।'

'क्या कह रही है तू ?'

'सच कह रही हूं···यह देख जल्दी से···।'

रचना ने देखा···रानी और भंवरलाल पिछले बगीचे के एक कुंज में थे। भंवरलाल ने रानी को खींचकर अपने सीने से लगा लिया था और रानी भी किसी बरसों की बिछड़ी प्रेमिका के समान भंवरलाल से लिपट गई थी···रचना का बदन थर-थर कांप रहा था—दिमाग जैसे हल्का-फुल्का होकर हवा में उड़ा चला जा रहा था—फिर उसने देखा भंवरलाल रानी को अंधेरे में खींच ले गया···

रचना पत्थर की मूर्ति के समान खड़ी हुई थी···रूपा ने उसका कंधा झंझोड़कर कहा—

'देख लिया तूने अपनी आँखों से ?'

'ई—।' रचना उछल पड़ी।

'यह है वह दशरथ की प्रेमिका जिसके लिए उसने तुझ जैसी पत्नी को ठुकरा दिया ?'

'लेकिन उन्हें सत्य का ज्ञान नहीं।'

'निःसन्देह वह इस सत्य से अनभिज्ञ होगा···मुझे तो रानी और भंवरलाल दोनों ही फ्रॉड लगते हैं—अब तेरे लिए अपने पति का प्यार जीतने का इससे अच्छा अवसर नहीं मिलेगा।'

'क्या मतलब ?'

'दशरथ को सचाई बता दे।'

'लेकिन क्या वह मेरी बात पर विश्वास करेंगे ? वह यह नहीं समझेंगे कि मैं उन पर झूठा आरोप लगा रही हूं।'

'हाँ, यह तो है लेकिन इसका उपाय भी है।'

'वह क्या ?'

'जब रानी और भंवरलाल साथ-साथ रहते हैं तो यह ड्रामा तो चलता ही होगा।'

'स्पष्ट है—।'

'बस—किसी दिन तू दशरथ को यह सब कुछ अपनी आँखों से दिखा दे।'

'हाँ—यह ठीक है।'

एकाएक क्लाक ने बारह के घंटे बजाए और रूपा चौंक पड़ी—

'बारह बज गए···हमारी गाड़ी एक बजे जाती है···उन्होंने कहा था कि स्टेशन पर ही मिल जाएंगे—और देख···हमारा तबादला केवल छः महीने के लिए हुआ है —छः महीने बाद जब मैं वापस आऊं तो दशरथ तुझसे इतना ही प्यार करता हो जितना मेरे पति मुझसे करते हैं—'

फिर रूपा ने रचना को लिपटाकर उसका प्यार लिया और बोली—

'विश यू गुड लक···।'

रूपा चली गई और रचना सन्नाटे में

खड़ी रह गई···डैडी की अचानक मौत का उसे बहुत दु:ख हुआ था···अब भंवरलाल और रानी के सम्बन्ध को अपनी आँखों से देखकर उसे कुछ सन्तोष हुआ···रानी दशरथ से सच्चा प्यार नहीं करती थी···अब जब दशरथ पर यह भेद खुलेगा तो वह अवश्य उससे प्यार करने लगेगा इसलिए कि उसका प्यार नि:स्वार्थ और सच्चा था···एक पत्नी का प्यार था···

'और जब वह रानी से घृणा करने लगेंगे तो उनका प्यार मुझे मिल जाएगा···'

'हे भगवान् ! क्या सचमुच उनका प्यार मुझे मिल जाएगा ?'

'क्या सचमुच वह कभी मुझे प्यार से अपने सीने से लगायेंगे ?'

रचना ने एक झुरझुरी-सी ली और बड़बड़ाई।

'हे भगवान् ! मैं कितनी सौभाग्य-शालिनी हूं···मेरे खोए हुए पति मुझे वापस मिल जायेंगे···लौट आयेंगे मेरे पास···कुछ दिन के लिए भटक गए थे वह—'

रचना ने खिड़की से बाहर बाग के कुंज की ओर देखा···भंवरलाल और रानी अभी वहीं थे लेकिन केवल उनकी टांगें दिखाई दे रही थीं···लगता नहीं था कि वह जल्दी वहां से हट जाएंगे···रचना सोच रही थी कि काश 'वह' इसी समय यहाँ आ जाएं और अपनी आँखों से यह सब-कुछ देख लें—

'हे भगवान्, वह जल्दी से आ जाएं।'

द्वार पर हल्की-सी आहट हुई और रचना का दिल बड़ी जोर से धड़क उठा···वह अपने सीने पर हाथ रखकर बड़बड़ाई—

'आ गए···वह आ गए शायद।'

किवाड़ बहुत धीरे से खुला था···रचना दशरथ के स्थान पर ज्वाला प्रसाद को चुपके से अन्दर प्रवेश करते देखकर इतनी जोर से चौंकी जैसे उसके पास किसी ने बम दे मारा हो···लेकिन उनके साथ कौशल्या को भी भीतर आते देखकर उसे कुछ सन्तोष हो गया···वह जल्दी-जल्दी अपने सिर पर आंचल ठीक करने लगी···

ज्वाला प्रसाद और कौशल्या रचना को इस समय जागते देखकर यूं खड़े रह गए थे जैसे वह पत्थर के बन गए हों—रचना ने आगे बढ़कर पूछा···

'बाबूजी—मांजी···क्या बात है ?'

दोनों अनायास उछल पड़े···ज्वाला प्रसाद जल्दी से बोले—

'वह···ओह···बेटी···ब···ब···बात यह थी कि···'

'बेटी···' कौशल्या ने जल्दी से कहा, 'हम लोग तुमसे कुछ विशेष बातें करने आए थे···'

'इतनी रात में ?'

'हाँ—बातें इतनी ही जरूरी थीं।'

'कहिए—।'

'वह···वह···बात यह है···कि···।'

ज्वाला प्रसाद ने अपने सूखते गले को थूक निगलकर गीला करने का प्रयत्न किया और मेज पर रखे पानी के जग की ओर देखकर बोले—

'बेटी···जरा पहले एक गिलास पानी पिला दो···।'

रचना धीरे-धीरे पानी की ओर बढ़ी···उसकी पीठ ज्वाला प्रसाद और कौशल्या की ओर हो गई···वह झुककर गिलास उठा कर जग से पानी उंडेलने लगी···तभी कौशल्या ने कुहनी से ठहूका मार कर ज्वाला प्रसाद को संकेत किया। ज्वाला प्रसाद उछल पड़े···फिर कंपकंपाते पाँव से रचना की ओर बढ़े···

इससे पहले कि रचना पानी का गिलास लेकर ज्वाला प्रसाद की ओर मुड़ती···अचानक ज्वाला प्रसाद ने पीछे से रचना की गर्दन पकड़ ली···रचना ने बौखलाकर गिलास छोड़ दिया जो लुढ़ककर गिर गया···पानी कालीन में सोख गया···रचना कुलबुला कर अपनी गर्दन छुड़ाने का प्रयत्न करने लगी लेकिन ज्वाला प्रसाद के ऊपर तो इस समय जैसे शैतान सवार था···न जाने इस समय उनकी हड्डियों में इतना बल कहां से आ गया था···रचना अपने आपको छुड़ा नहीं पाई···उसकी बचाव की शक्ति क्षीण होती जा रही थी···गले से आवाज तक न निकल सकी थी—धीरे-धीरे उसके दोनों हाथ लटक गए थे···और वह रबड़ के पुतले के समान ज्वाला प्रसाद की बाँहों में झूलने लगी थी···ज्वाला प्रसाद ने उसे छोड़ दिया और वह धम से फर्श पर गिरी···

कौशल्या दीवार के पास खड़ी थर-थर कांप रही थी···ज्वाला प्रसाद और कौशल्या जल्दी से द्वार की ओर झपटे···और···

दूसरे ही क्षण उन्हें ऐसे लगा जैसे उनके माथे से कई मन भारी कोई चीज टकरा गई हो···

उनके सामने दशरथ खड़ा था···।

'बापू···।'

दशरथ की दु:ख और आश्चर्य से भरी आवाज कंपकंपा उठी···वह अपने आप ही चौंक पड़ा। वह कमरे के बीच में खड़ा कांप रहा था। उसका पूरा बदन पसीने में लथ-पथ यूं लग रहा था जैसे वह अभी-अभी कपड़ों समेत नहाकर निकला हो—उसकी साँस इस प्रकार फूली हुई थीं जैसे वह मीलों पैदल भागता चला आ रहा हो—आंखें फटी हुई थीं और रचना की आत्मा पर ही जमी हुई थीं···

रचना की आत्मा ने मुस्कराकर दशरथ की ओर देखा और बोली—

'तुम्हें कुछ याद आया दशरथ ?'

'हाँ—' दशरथ हाँपता हुआ बोला, 'मुझे सब कुछ याद आ चुका है—मुझे सब कुछ याद आ चुका है—मुझे सब कुछ याद आ चुका है···इसके बाद···इसके बाद···मैंने स्वयं पुलिस को बुलाकर बापू और माँ को कानून के हवाले कर दिया था—बापू और माँ···दोनों के विरुद्ध मैंने गवाहियाँ दीं···उनके विरुद्ध वैसे भी बहुत सारे प्रमाण थे—दोनों को मौत की सजा हो गई।'

और फिर—फिर ठाकुर साहब की···तुम्हारे डैडी की वसीयत वकील ने बताई थी जिससे पता चला कि मरने से दो दिन पहले ही मेरी तीनों बहनों के दहेज के लिए वह पच्चीस-पच्चीस हजार रुपये अलग कर गए थे···और···और फिर···मैंने रानी को अपनी पत्नी बना लिया था···वह घर की मालकिन बनकर रहने लगी थी।

रचना धीरे से हंसी और बोली—

'और वह घर की मालकिन धीरे-धीरे प्रभाव करने वाला विष तुम्हें देती रही थी—रानी से शादी करने के ठीक दो बरस बाद तुम···तुम मर गए थे···'

'हां—मुझे यह भी याद है···मुझे सब

शेष पृष्ठ २६ पर
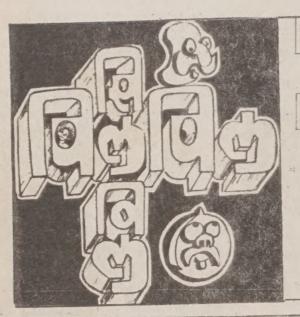
कुछ खबर भी है थम दोनों को कि दुनिया में क्या हो रहा है ? दिल्ली मां आजकल हा-हाकार मचा है ।
हा-हाकार मचा है ? क्यों मचा है हा-हाकार ?
थम दोनों ने आजकल अखबार पढ़ना छोड़ दिया है ?
हम पहले पढ़ा करते थे जब हमारे नेता चौधरी चरणसिंह जी की फोटो आया करती थी अब नहीं आती ।
GRRR

सारी दिल्ली की जनता रोष से भरी है । एक नेवी के अफसर के बच्चों संजय और गीता की संगीन हत्या ! उनकी छुरों से गुदी लाशें पश्चिमी दिल्ली में झाड़ियों में पड़ी मिलीं । उन दोनों ने धौला कुआं से रेडियो स्टेशन तक के लिये कार में लिफ्ट मांगी । एक डाक्टर ने गोल डाकखाने तक उनको लिफ्ट दी, वहां से वह दूसरी कार में चढ़े । कहा जाता है कि

यही खूनी कातिलों वाली कार थी । लोगों ने कार में छीना-झपटी होते देखा । एक इन्जीनियर ने तो उनका पीछा भी किया । अभी कल ही पुलिस को वह कार भी मिल गई है जिसमें कातिलों ने उन बच्चों को मारा । कार में खून के धब्बे और अंगुलियों के निशान भी पाये गए । पुलिस निष्क्रियता की चारों तरफ आलोचना हो रही है ।

इब पता लगा ? थारे होंदिया दिल्ल.. मां इतना बड़ा जुर्म हो गया । फिट्टे मुँह हो थारा । थमको शर्म आनी चाहिये ।

हमको सरम आनी चाहिये ? इस बात का मतलब म्हारी समझ में नहीं घुसा। सिर्फ हमको ही सरम क्यों आनी चाहिये?

अच्छा समझ गिया! वह चौधरी चरण सिंह जो के रिश्तेदार के बच्चे होंगे । लोगों की यहां तक हिम्मत बढ़ गई है ।
GR
RRR

गुड़गांवे के चौधरियों के परिवारों के साथ ऐसा अन्याय किया गया। इसका हजाम अच्छा नहीं होगा। हम सबको चीर-फाड़ कर खा जायेंगे।
हमारे होते चौधरी चरणसिंह जी के रिश्तेदार के बच्चों पर किसने हाथ डाला? किसके सिर पर मौत नाच रही है? हम उसका लहू पी जायेंगे।
इनको क्या हो गिया है ? यह तो गुस्से में जनावर का रूपधारण कर रहे हैं। मैंने बेकार इनको उकसाया।

शांति, भाइयों शांति ! आपको सख्त गलत फहमी हुई है। आपने पूरी बात सुनी भी तो नहीं। जिन बच्चों के साथ यह दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना हुई है वह चौधरी चरण जी देश के सच्चे जनतंत्री नामक के रिश्तेदार के बच्चे नहीं थे। चौधरी साहब से उनका दूर का भी रिश्ता नहीं है

तो यह क्या बात बनी ? हम तो सोचे थे कि यह चौधरियों के साथ यह सब हुआ है और किसी के साथ कुछ भी होता रहे हमें उससे क्या ?
हमारे तो चौधरी चरणसिंह जीते रहने चाहिये और म्हारे खेतों को कोई नुकसान नहीं पहुंचना चाहिये। बाकी दुनिया से म्हारे को क्या लेना-देना ?

यह चूहा भी पूरा हल्दी की गांठ वाला पंसारी है।
अरे भाई याद करो, थमने जब ए-वन जासूस कम्पनी खोली थी तो क्या प्रण उठाया था ? थमने कानून तोड़ने वालों की गर्दन तोड़ने की कसम खाई थी।

आज चोर बदमाशों में कानून का डर व्याप्त हो गया है। आपको उन खूनी कातिलों को पकड़ कर जैल की हवा खिलानी चाहिये। यह थमारा परम कर्तव्य है। यह याद रखिये खूनी के पकड़ने वाले को बीस हजार रुपये इनाम मिलेंगे।

क क क क क क क्या ?
ब्लीश हज्जार रुपये ?
20000

खूनी बम्बई का कुख्यात भगोड़ा फरार बदमाश बिल्ला बताया जाता है। वह दुबले-पतले शरीर का गौरवर्ण है। कद उसका पांच फुट छः इंच है। वह मेन्ड्रैकस खाने का आदी है।

पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।
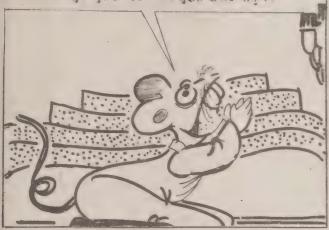
दीवाना अंक २३ प्राप्त हुआ, हर बार की तरह इस बार भी चिल्ली महाशय का करिशमा देखते बनता था। फैंटम, बच्चा झमूरा, चचा बातूनी, बन्द करो बकवास, सवाल यह है, काका के कारतूस एवं क्यों और कैसे इत्यादि रोचक रहे, दीवाना में कहानिया काफी लम्बी होती हैं, इसलिए पाठक छोटी कहानियां भेजने में असमर्थ रहते हैं, आप एक प्रतियोगिता रखें, जिसमें पाठक कोई अपने जीवन की ऐसी घटना लिखें। जो वे भूल ना पाते हों सबसे रोचक लेख को इनाम देकर पुरस्कृत किया जाये।

कमलकांत जैन—माडल टाऊन दिल्ली

दीवाना का अंक २७ मिला, ऐसा लगा जैसा की हँसी का खजाना दीवाना में ही है। मुखपृष्ठ तो बहुत ही अच्छा लगा। 'चिल्ली लीला' २३२ और राजनारायण को लिखा चिल्ली द्वारा प्रेम-पत्र पढ़कर दिल खुश हुआ। 'सड़ेआम सेबम सूनाडम' की फिल्म कहानी पढ़कर मजा आ गया। धारावाहिक उपन्यास 'दूसरी आत्मा' का भाग ४, मोटू-पतलू और कम्प्यूटर मानव हास्य कथा, तीसमार खां ने डाकू पकड़ा और सवाल यह है ? बहुत ही पसन्द आये।

हरीश गेरा—रिवाड़ी

रूखा की मनहूसियत खत्म होते ही 'दीवाना' का अंक २८ मिला। ए-वन जासूस कम्पनी को पेन्टिंग केस में सफलता मिलने पर बधाई। 'लल्लू करे कुल्लीयां रब सिडी पावे' खैर सिलबिल के बीस हजार पक्के हुए। मशीनी आदमी ने मोटू-पतलू की अच्छी दुर्गत बनाई। दीवाना पंचतंत्र और 'मच्छर है महान' फीचर काफी पसन्द आए। अंक में फिल्म पैरोडी न पाकर भारी निराशा हुई। फिल्म पैरोडी हर अंक में दिया करें।

भारत भूषण जिन्दल—जैतो मण्डी

फिल्म पैरोडी हर अंक में छापना असम्भव है। —सं०

दीवाना का नया अंक २७ देरी से मिला। दीवाना पत्रिका की लोक-प्रियता को देखकर एक बात सहज रूप से उठती है। दीवाना पत्रिका बाजार में आती है तो तुरन्त बिक जाती है। सड़ेआम सेबम व सूनाडम, आपस की बातें, काका के कारतूस, क्यों और कैसे, साप्ताहिक भविष्य, धारावाहिक उपन्यास भाग ४, दूसरी आत्मा (संगीता), मोटू पतलू और कम्प्यूटर मानव, तीसमार खां ने डाकू पकड़ा (आलोक माथुर) कोई है (अर्जुन अरविन्द) आदि कहानियां काफी पसन्द आईं। इतना अच्छा अंक निकालने के लिए हमारी ओर से बधाई अगले अंक की इन्तजार में।

के० डी० इन्दौरिया—गणेशगढ़

दीवाना अंक २८ मिला। पढ़ कर मजा आ गया मगर ये अंक काफी लेट आया था इसमें मोटू-पतलू और कम्प्यूटर मानव, पिलपिल-सिलबिल बहुत अच्छे लगे। मच्छर है महान भी बहुत अच्छा था। चिल्ली लीला, दूसरी आत्मा अच्छी कहानियां हैं। दीवाना एक हास्य पत्रिका है इसके पढ़ने का हमें हमेशा इन्तजार रहता है कि कब दीवाना आयेगा। आशा है आगामी अंक भी रोचक सिद्ध होंगे।

जुबैर अहमद—दिल्ली-२१

बुक स्टालों के चक्कर पे चक्कर लगाने के बाद १७ अगस्त ७८ का अंक प्राप्त हुआ। यह अंक १६ दिन बाद मिला। क्या कारण है दीवाना आजकल बहुत देर से प्रकाशित हो रहा है ?

इस अंक में फिल्म पैरोडी होनी चाहिए थी, परन्तु वह नदारद मिली। फिर भी फिल्मी सितारों के संदेश, मच्छर है महान, पंचतंत्र, आपस की बातें, काका के कारतूस, पिलपिल-सिलबिल आदि जोरदार लगे। चिल्ली लीला भी ठीक रही। परन्तु विज्ञापनों की अधिकता ने कुछ निराश किया। कृपया मनोरंजन स्ट्रीट कुछ ज्यादा दिया करें।

रमेश चन्द्र 'राछेश'—जनौली

दीवाना के सभी स्तम्भ बहुत ही मजेदार हैं। अंक नं० २७ का मुखपृष्ठ मनमोहक था, मुझे बहुत अच्छा लगा। लेकिन यदि आप फिल्म अभिनेत्री या फिल्म अभिनेता के जगह माह में एक बार किसी भी 'भगवान' का फोटो दिया करें तो अच्छा रहता. साथ ही आप मासिक कलेण्डर भी 'दीवाना' में छाप करें। यहीं आपके दीवाना पत्रिका में कमी र गई यदि आप दोनों को कम से कम माह में एक बार छापा करें तो शायद सभी 'दीवाना के पाठक गण भी इस स्तम्भ को अवश्य पसन्द करेंगे। **विनोद कुमार सोनी—म० प्र०**

दीवाना अंक २७ प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ मिला। चिल्ली फल तोड़ने का अजीबो-गरीब साधन दिखा रहा था तथा फिल्मी पैरोडी बहुत ही उत्तम रही। कुछ आगे बढ़ने पर मेरी मुलाकात दूसरी आत्मा से हो गई पिलपिल-सिलबिल हमेशा की तरह मनोरंजन करते रहे तथा सभी स्तम्भ अन्य साप्ताहिक की तरह ही रहे। मैं भगवान से यही आराधना करता हूं कि दीवाना का आज हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में ऊंचा स्थान है व सदा रहे।

वीरेन्द्र कुमार गर्ग—म० प्र०

मैं दीवाना का ६ वर्ष से पाठक हूं ज इसमें मांकड़ जासूस व जेम्स बांड ००७ छप थे। दीवाना का अंक २७ मिला बहुत मजेदार था चिल्ली लीला पिलपिल-सिलबि सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की पैरोडी ब जोरदार है। मोटू-पतलू, बच्चा झमूरा, फैंट का कोई जवाब नहीं। धारावाहिक उपन्या दूसरी आत्मा के चारों भाग बहुत जोरदा रहे। अन्य सभी स्तम्भ मजेदार रहे। आप शिकायत है कि दीवाना यहां २०-२५ दि लेट पहुँच रहा है पिछले ३ महीनों से, आ है कि आप ध्यान देंगे।

आद्या शंकर वाजपेयी—कानपु

मोटू-पतलू के मित्र घसीटा राम का
साप्ताहिक भविष्य

पिछले दिनों ज्योतिष आचार्य [illegible] और [illegible] मथुरा वासी ने घसीटा राम जी का साप्ताहिक भविष्य बताया तो वह खुशी से फट पड़े ।

उनकी गर्दन ना काटो ? दावत खिलाऊं, शहनाई बजवाऊं, अपना दिवाला पिटवाऊं । मेरा नया-नया बाप मरा है क्या ? उन घासलेट के पीपों का स्वागत करना मुझे अच्छी तरह आता है ।
बेहोशी की दवा मिला कर यह शर्बत बना रहा हूं उनके लिये, मैं भी बड़ा काईयां हूं । बड़े-बड़े उपहार न लाये तो उन्हें यह शर्बत पिला कर बेहोश करूंगा और उनकी घड़ियां, और बटवे सब साफ कर जाऊंगा ।
मेहमानों के आने पर बर्थडे पार्टी की रौनक कुछ और ही थी ।
झंडियों की बजाये यह बनियान और जांघिये लटकाये हैं इस कंजूस ने ।
मिठाईयां, समोसे और चाय काफी कहां है ।
तुम्हारा कलेजा ठंडा करने के लिये शर्बत बना रहा हूं मैं ।
Happy Birthday To GHASITA RAM.
केक बनवाया है, जूते की शक्ल का ।
जीवन भर जो खुद खाया है वही हमें खिलायेगा ।

अरे मेहमानों को कम से कम पानी तो दो, पहले पीने के लिये।
घर के बाहर कमेटी के नलके से पानी ही पानी बह रहा है। वहां जाकर पी लो। अब यह बताओ, मेरे जन्म दिन पर उपहार में क्या लाये हो।

मैं यह लाया हूं।

इससे आपको बीस साल क्या चालीस साल पहले का तजुर्बा याद आ जायेगा।

मेरा यह उपहार स्वीकार कीजिए और दुनिया भर के गमों से मुक्त होकर चैन की बंसी बजाइये।

मेरा उपहार देख कर आपका दिल बल्लियों उछल पड़ेगा।
अरे बेड़ा गर्क हो तुम्हारा ! मेरी जान लेने वाले उपहार लाए हो तुम।

पर मैं भी बड़ी चलती रकम हूँ, जिसे तुम केक की शक्ल वाला जूता समझ रहे हो। वह वास्तव में चमड़े का जूता है और उसमें बूर का नमकीन हलवा भरा हुआ है तुम्हारे खाने के लिए।
नमकीन हलवा ! और वह भी बूर का !!

कोई बात नहीं । हम घर का हलवा निकाल कर उसमें बैंगर की पेस्टियां भर देंगे । अब जरा जादू के खेल हो जायें ।

हमारा डिटेक्टिव चेलाराम जादू के नये-नये खेल सीख कर आया है ।

पर इससे पहले मेरी ओर से घसीटा राम जी के बर्थ डे की खुशी में शानदार दावत हो जाए। यह लो दावत के रुपये मैं दे रहा हूँ।

हर प्रकार की मिठाइयां, मेवे फल, केक और नमकीन ले आओ। चाहे रुपया पानी की तरह बह जाए पर दावत में कोई कसर उठा न रखना।
अभी लाते हैं सब सामान मिनटों में।

कमाल है, किस दरिया दिली से और बेदर्दी से मेरे बर्थ डे पर खर्च कर रहा है। यह चूहा तो मेरा सब से बड़ा शुभ चिंतक निकला। ज्योतिष आचार्य भीमपलासी और मथुरा-वासी ने ठीक ही कहा था कि मित्र आड़े समय में काम आएगा।

थोड़ी ही देर में मोटू-पतलू बाजार जाकर खाने-पीने का सब सामान ले आये।

मेजों पर सब सामान सजा दिया गया। और सब मेहमान बेदर्दी से माल पर हाथ साफ करने लगे। पर घसीटा राम को किसी ने पास नहीं आने दिया।

मुझे भी अपने साथ खाने दो ना !
नहीं ! तुम हमारे साथ नहीं खा सकते । तुम्हें मेहमान के बाद खाना चाहिए ।

जैसा तुम कह रहे थे, तुमने उसमें केक और पेस्ट्रियां भर दी हैं क्या ?
उस जूते में ।
हाँ कऊडंग केक ।

और घसीटा राम ने जैसे ही जूते में मुह मारा, अपने ही बनाए नमकीन हलवे ने उनकी तबीयत साफ कर दी ।

अरे बेईमानों यह तो वही नमकीन कीचड़ है । आख थू···!
आख थू...
अब इतना और बता दें, यह दावत हम तुम्हारे ही पैसों से उड़ा रहे हैं ।

जब चेलाराम ने तुम्हारी जेब से ताश की गड्डी निकाली थी, तो वास्तव में तुम्हारा नोटों से भरा बटुआ निकाला । और ताश की गड्डी अपनी आस्तीन में से निकाल कर दिखा दी थी ।

मेरा बटुआ, हाय मेरा बटुआ । उसमें तो एक हजार रुपये के नोट थे । मैं जिन्दा नहीं छोडूंगा तुझे चूहे की दुम ।

अगले सप्ताह जब आपको होश आए तो इन पृष्ठों पर अपने प्रिय कलाकारों के नए जोरदार कारनामे देखिए।

१९७८ समाचार
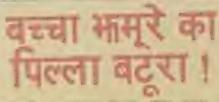
विश्व क्रिकेट कप (प्रूडेन्शल कप)

इंगलैंड में अगले वर्ष ९ जून से २३ जून तक होने वाले प्रूडेन्शल कप के लिए टीमों का निम्न प्रकार से ड्रॉ रखा गया है।

ग्रुप (ए)—वेस्टइंडीज, भारत, न्यूजीलैंड तथा चौथा मैम्बर।

ग्रुप (बी)—आस्ट्रेलिया, इंगलैंड, पाकिस्तान तथा चौथा मैम्बर।

नोट—चौथे मैम्बरों का चुनाव निम्न टीमों में से किया जायेगा, "पू० अफ्रीका, पापुआ, न्यूगिनी, अर्जेन्टिना, सिंगापुर, बरमूडा, डेनमार्क, फिजी, मलेशिया, कनाडा, बंगलादेश, इजरायल, अमरीका, हॉलेंड, जिब्राल्टर तथा श्री लंका। इन देशों के मैच पहले होंगे। दो विजेता देशों को एक एक वर्ग 'ए' तथा वर्ग 'बी' में स्थान मिलेगा। ये सारे देश टैस्ट नहीं खेलते। परन्तु देशों की सूची देखने पर आपको पता लगेगा कि क्रिकेट अब विश्व में कितना लोकप्रिय हो रहा है। हो सकता है कुछ ही वर्षों में एक दर्जन से अधिक देश टेस्ट क्रिकेट की दुनिया में प्रवेश पा जायें। फिर वर्ष भर टैस्ट मैचों की भरमार होगी। प्रत्येक देश को कम से कम चालीस टैस्ट स्तर के खिलाड़ी हमेशा तैयार रखने होंगे।

भारतीय टैस्ट खिलाड़ियों के लिए आकर्षण रकम

क्रिकेट खिलाड़ियों ने भी अपनी एसोसिएशन बनाली हैं और वह अपने अधिकारों के लिए निरन्तर संघर्षरत हैं वैसे आज के भारतीय टैस्ट खिलाड़ियों की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है। इसका अनुमान आप इसी से लगा सकते हैं कि दस वर्ष पूर्व भारतीय टैस्ट खिलाड़ी को प्रति टैस्ट के केवल ७५० रुपये मिलते थे आज हर खिलाड़ी एक टैस्ट मैच का ५००० रु० पाता है (इसके इलावा ४००० रुपये अलग से बोर्ड अपने पास रखता है जो वह खिलाड़ी को इकट्ठी रकम के रूप में खिलाड़ी के टैस्ट खेलों से रिटायर होते समय देगा) खिलाड़ी को अपने पास खाने रहने का खुद प्रबन्ध करना होता है। खाने-रहने के खर्चे के लिए प्रत्येक खिलाड़ी को १६००-रुपये प्रति टैस्ट मिलते हैं। एक टैस्ट सैन्टर में प्रायः आठ दिन बिताने पड़ते हैं, इस प्रकार खर्चे के लिए प्रतिदिन २०० रुपये का हिसाब बैठा—भारत की आर्थिक स्थिति व रहन-सहन को देखते हुए अच्छी

रकम ही मानी जा सकती है। (बोर्ड को यह फैसला इसलिए करना पड़ा चूंकि कुछ क्रिकेट खिलाड़ियों ने जब तक रहने-सहने का बिल बोर्ड चुकता करता था तब नाजायज फायदा उठाया। वे अपने यार दोस्त या चमचों को इकट्ठे कर बोर्ड के नाम पर खाना खिलाते पिलाते थे। बाद में बोर्ड को सारे अनाप-शनाप खर्चों के बिल चुकता करने पड़ते थे।)

अगले १५ महीनों में भारत लगभग २३ टैस्ट मैच खेलेगा। जो खिलाड़ी यह सारे टैस्ट खेलेगा उसे नगद दो लाख से ऊपर की ही आय होगी। 'मैन आफ दी मैच' एवार्ड वगैरह की अलग से होगी। यूं समझिये कि आय के लिहाज से भी हमारे क्रिकेटर अब सचमुच स्टार हो गए। इससे क्रिकेट खेलने के लिए युवा खिलाड़ियों में और उत्साह पैदा होगा।

किरमानी पैकर सर्कस में भर्ती

भारत के विकेट कीपर किरमानी के अगले सीजन से पैकर सर्कस में भर्ती होने की संभावना है। कहा जाता है कि उन्होंने अनुबंध स्वीकार कर लिया है। इस विषय में यह फिर हम पाठकों को याद दिलादें कि सुनील गावस्कर ने पैकर का अनुबंध अस्वीकार कर दिया था।

दुखद मृत्यु

भारत के प्रसिद्ध आलराउंडर श्री वीनू मांकड का २१ अगस्त को बम्बई में दिल का दौरे से मृत्यु हो गयी। वीनू मांकड ने ४४ टैस्टों की ७२ पारियों में २१०९ रन २३१ उच्चतम स्कोर (भारत का रिकार्ड), ५ शतक, ३३ कैच तथा १६२ विकटें लीं। उन्हें भारत का सर्वश्रेष्ठ आलराउंडर माना जाता है। वीनू तथा पंकज राय की प्रथम विकेट की ४१३ रनों की साझेदारी टैस्टों का विश्व रिकार्ड है।

राष्ट्र मंडलीय खेल

एडमांटन (कनाडा) में सम्पन्न राष्ट्रमंडलीय खेलों में भारत का प्रदर्शन उत्साह जनक नहीं रहा। बीस देशों में भारत का स्थान छठा रहा! पदकों की तालिका निम्न प्रकार से रही।

खेल	स्वर्ण	रजत	कांस्य
कुश्ती	३	३	३
वेट लिफ्टिंग	१	१	०
बैडमिन्टन	१	०	१
एथलैटिक्स	०	०	१
बॉक्सिग	०	०	१
कुल	५	४	६

स्वर्ण पदक विजेता

वेट लिफ्टिंग

एगातुर करुणाकरण

बैड मिन्टन

प्रकाश पादुकोने (आज बैडमिन्टन में प्रकाश चोटी के पांच खिलाड़ियों में आते हैं।)

कुश्ती	कुश्ती	कुश्ती
अशोककुमार	सतबीरसिंह	राजिन्दर सिंह

रवीन्द्र पुनीयानी—बिहार

प्र० : छः गेंदों में (टैस्ट मैच में) छः छक्के मारने वाले खिलाड़ी का नाम बतायें क्या किसी भारतीय खिलाड़ी को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है?

उ० : भारत ही क्या विश्व में कोई ऐसा खिलाड़ी पैदा नहीं हुआ जो ६ छक्के मार सका हो टैस्ट मैच के ओवर में।

खेल-खेल में

दीवाना साप्ताहिक

८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,

नई दिल्ली-११०००२

हाकी कैसे खेलें

स्टिक

हाकी खेल में स्टिक का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। स्टिक की ऊंचाई, भार तथा संतुलन खिलाड़ी के शरीर के अनुरूप होना चाहिए। स्टिक की ऊंचाई असल में खिलाड़ी के हाथों की लम्बाई के अनुसार ही कम या ज्यादा होनी चाहिए। यदि स्टिक छोटी होगी तो खिलाड़ी को ज्यादा झुकना पड़ेगा और यदि बड़ी होगी तो पकड़ने में तथा संचालन में बाधा उत्पन्न होगी। अतः स्टिक ऐसी होनी चाहिये कि खिलाड़ी उसे आसानी से उपयोग में ला सके।

साधारणतया स्टिक ३० इंच से ३७ इंच तक लम्बी होती है। स्टिक का वजन २८ औंस का होना चाहिए। लेकिन फारवर्ड खिलाड़ियों को २२ औंस वजन की स्टिक प्रयोग में लानी चाहिये। स्टिक में पर्याप्त लचकीलापन होना चाहिए ताकि स्टोक लगाते समय हाथ में झटका महसूस न हो।

स्टिक के आगे के मुड़े हुए भाग को अलसी के तेल में भिगोकर रखना चाहिये ताकि उसका अग्रभाग मज़बूत व ठोस बना रहे और कटने-फटने या धूप में चटकने से बचा रहे। जिस प्रकार एक लेखक लिखने के लिये अपनी कलम को स्वच्छ व निर्दोष रखता है, उसी प्रकार एक खिलाड़ी को अपनी स्टिक की सार-संभाल का ध्यान रखना चाहिए। दो इंच के घेरे वाले रिंग मे स्टिक गुजर जानी चाहिये—इतनी उसकी गोलाई-चौड़ाई होनी चाहिये।

गेंद

हाकी खेल में स्टिक और गेंद की ही करामात होती है। स्टिक-संचालन की सफ़लता गेंद के ठोसपन तथा गोलाई और भार पर भी निर्भर होती है। इसलिए गेंद भी निश्चित आकार-प्रकार की होनी चाहिए। यदि गेंद आकार-प्रकार में ठीक नहीं है तो हम उसे ठीक निशाने पर पहुंचाने में सफल नहीं हो सकते।

गेंद के ऊपर का खोल (कवर) सफेद चमड़े का होना चाहिये। गेंद की सिलाई मजबूत होनी चाहिए। गेंद के अन्दर एक कार्क पर सुतली लिपटी होती है। सुतली इतनी सख्ती से लिपटी रहती है कि उसमें कड़ापन आ जाता है। गेंद का वजन ५$\frac{१}{३}$ औंस मे अधिक तथा ५$\frac{१}{३}$ औंस से कम नहीं होना चाहिए। गेंद के चारों ओर का घेरा (परिधि) कम से कम ८$\frac{१३}{१८}$ तथा

अधिकतम ९$\frac{१}{४}$ इंच होना चाहिए।

गेंद की गोलाई बिल्कुल निर्दोष होनी चाहिए ताकि गेंद के लुढ़कने में बाधा न हो। गेंद जितनी ज्यादा सख्त होगी, उतनी ही अच्छी होगी। एक गेंद का उपयोग अधिक से अधिक दो मैचों के लिए हो सकता है।

पोशाक

पूरी टीम की पोशाक यदि एक रग की होती है तो विपक्षी टीम में तथा प्रतिपक्ष टीम में अन्तर भी समझा जा सकता है और कौन खिलाड़ी किस टीम का है यह दर्शक पोशाक के रंग से भली-भांति जान लेता है।

दूसरे वेषभूषा यदि एक सी हो तो खेल का आकर्षण भी बढ़ जाता है।

सामान्यतया हाकी खिलाड़ी को आधी बांह की शर्ट या जर्सी, नेकर, मोजे तथा केनवास के जूते पहनने चाहिएं। कीचड़ वाले मैदान में फिसलन से बचने के लिए कील वाले जूते भी पहने जा सकते हैं। मोजे घुटने से नीचे ही पहने होना चाहिए।

खिलाड़ी की जर्सी या शर्ट के पीछे पीठ पर खिलाड़ी का नम्बर बड़े आकार मे अंकित होना चाहिये ताकि दूर बैठे दर्शक नम्बरों द्वारा खिलाड़ियों को पहचान सकें।

पैड व दस्ताने

पैड तथा दस्तानों का प्रयोग गोलकीपर करता है। गेंद की चोट से बचने के लिए गोलकीपर को टांगों के सामने वाले भाग पर पैड बांधने पड़ते हैं ताकि तेजी से आती हुई गेंद से उसके पैर की हड्डी में चोट न लग जाये। इसी ख्याल से उसे हाथों में भी गद्दीदार दस्ताने पहनने पड़ते हैं। इसका कारण

यह है कि गोल क्षेत्र में जाती हुई गेंद को गोलकीपर हाथों तथा पैरों से भी रोक सकता है और ऐसा करने पर वह चोट लगने से बचा रहता है।

गोल क्षेत्र के आस-पास लगे साज सामान जैसे गोल-स्तम्भ, जाली, पट्टी तथा खेल के मदान की सीमा पर लगी झंडियों आदि सामान का वर्णन हम खेल का मैदान नामक शीर्षक में कर चुके हैं। हाकी, लंग गार्ड तथा गेंद के चित्र दिये जा रहे हैं।

(क्रमशः)

फैण्टम और
हनीमून की तैयारियां
जंगल के मुखियाओं ने एक सप्ताह के लिये छोटे-छोटे गांवों में शादी की खुशी में झूमने की घोषणा कर दी है।
फैंटम की शादी
फैंटम की शादी
फैंटम की शादी ?...

अगर फैण्टम शादी कर सकता है तो प्रिय हम शादी क्यों नहीं कर सकते ? बोलो प्रिय ?

ड्रम ठप ठा।
यह नगाड़ों की आवाज कैसी है ?
कोई समारोह है परन्तु शहरवासियों को इसके बारे में कुछ नही पता...

मेरा प्रस्ताव है इस झरने के ठंडे पानी को पैमाना समझ कर पिया जाये...
घने जंगल में शादी की दावत और राष्ट्रपति लुआगा।
बहुत खूब !
बहुत खूब !!

डियाना अगर उस भयंकर महामारी में तुमने हमें नर्स बनकर न बचाया होता तो शायद...हमारे देशवासी तुम्हें बहुत प्यार करते हैं।

तुमने मेरी और राष्ट्रपति गोरांडा की जान बचाई, जान ही नहीं पूरे राष्ट्र को बचाया उसके लिये हम आभारी हैं।
दूल्हा दुल्हन दोनों के !

दावत के समय।
श्रीमती पामर, मैंने दूल्हे को बचपन में अपने हाथों से खिलाया है।
डा० ऐक्सल मैंने भी डियाना को बचपन से लेकर आज तक अपने साथ बड़े प्यार से रखा है।
सच कहती हो मम्मी !

श्रीमान मैं अभी तक यह नहीं समझ पाया कि यह दूल्हा है कौन, न जाने यह कब अपना नकाब उतारेगा ?
बाद में बताऊंगा कर्नल गोरबू

डियाना क्षमा करना, मैं आपको अपने मित्रों से परिचय कराना तो भूल ही गया।
?

नगाड़ों की आवाज से, गुफा तक...
हो हा
हा याह

फैण्टम की गुफा जहाँ पिछली २० पीढ़ियां दफनाई जा चुकी हैं।
एक छोटा-सा समारोह हमारे रीति रिवाजों के अनुसार...
...हम दोनों को अपने पूर्वजों से आशीर्वाद लेना है।
जरूर, क्यों नहीं।

दीवाना वर्ग पहेली १० रु० इनाम जीतिये

बांए से दांए

१. गाड़ी के आगे जिसका पेट खराब हो वह सुन्दर वस्तुएं बना सकता है। (५)

५. ललिता और माया से ग्रहण हुआ ! (२)

६. अमलतास में गन्दगी ! (२)

७. शरीर के पीछे डंडा रखने पर अपना फैलाव। (२)

८. बाद में पैदा हुआ कार्यक्रम। (३)

१०. शुरू आखिर में दूध तो मिलता है लेकिन अंत में सुनते-सुनते आई पस्ती। (३)

1	2		3	4
5		■	6	
7		■		■
	■	8		9
10			■	

ऊपर से नीचे

१. पूरा दलिया खाए बगैर तपस्या करने वालों का शा[illegible] ! (५)

२. कालेपन की ओर [illegible]ता बूढ़ा। (३)

३. पहले यौन संबं[illegible] फिर दर्जी का एक कारनामा बस यही [illegible]लाप। (२-२)

४. केरल में मिलना (२)

८. योगिता की बेसुरी [illegible]। (२)

९. पूंछ की ओर से शो.ले [illegible]नने वाला सर्प ? (२)

अन्तिम तिथि: २१-[illegible]-78

दीवाना प्रश्न-पहेलियां

अपनी दीवानगी परखिये

प्रश्न—

१. हमारा रंग हरा क्यों नहीं है ?

२. हरे रंग की एम्बैसेडर कारें लाल रंग की एम्बैसेडर कारों से ज्यादा पैट्रोल क्यों खाती हैं ?

३. प्यार में एक जगह बैठा क्यों नहीं जाता ?

४. वाइनेगर को पैरों पर क्यों नहीं डालना चाहिये ?

५. नोट जल्दी क्यों फट जाते हैं ?

६. पुराने जमाने में लोग गान को डरते क्यों थे ?

उत्तर—

१. क्योंकि हम भारत मां के लाल हैं।

२. हरे रंग की एम्बैसेडरों की संख्या लाल वालों से कई गुना अधिक है !

३. क्योंकि प्यार में सब चलता है।

४. क्योंकि वह सिरका है।

५. क्योंकि पैसा पैसे को खींचता है।

६. क्योंकि वह भूतकाल था !

प्र०: स्वेज नहर किन सागरों को मिलाती है तथा इसकी अपनी लम्बाई कितनी है ?

उ०: स्वेज नहर भूमध्य सागर तथा लाल सागर को मिलाती है । ये नहर दक्षिण में स्वेज से लेकर उत्तर में पोर्ट-सईद की सौ मील की लम्बाई में बनाई गई है । इस नहर से सुमुद्री रास्तों में एक महत्वपूर्ण रास्ते का निर्माण हुआ है तथा इसी से युरोप तथा फार ईस्ट के समुद्री रास्ते में हज़ारों मील की कमी हो गई है ।

स्वेज नहर दूसरी बड़ी नहरों से भिन्न है क्योंकि जिन दो समुद्रों को ये जोड़ती है उनके पानी का स्तर लगभग एकसा ही है और इसी कारण स्वेज नहर में जलहाश नहीं है । इस नहर का बराबर तलकर्षण किया जाता है जिससे रेगिस्तानों की रेत के कारण नहर बन्द न हो जाये । इस लम्बी नहर को पार करने में पन्द्रह घंटे का समय लगता है जहाज़ यहां पर काफिलों में यात्रा करते हैं ।

सबसे पहले सन् १००० बी०सी० के प्राचीन काल में मिस्र के लोगों ने स्वेज इस्थमस के आर-पार एक नहर का निर्माण किया था ये नहर नाइल नदी की शाखाओं से निकाल कर 'लाल सागर' के 'बिटर लेक' तक ले जाई गई थी । वर्तमान नहर नाइल नदी को नहीं छूती अपितु सीधी उत्तर दक्षिण में तिमसा झील से होती हुई बिटर झील पहुंचती है । ये झील लाल सागर के समीप है । स्वेज नहर का निर्माण फ्रांस के दूत तथा इन्जीनियर श्री फरडीनान्ड-डी-लिस्सटर ने दस वर्ष का समय लगा कर किया था । ये नहर सन् १८६६ में खुली थी । सन् १६५६ तक इस नहर का संचालन स्वेज कैनाल कम्पनी के हाथ में था, इसके बाद नहर पर से मिस्र का नियन्त्रण समाप्त हो गया । युद्ध का भी नहर पर बुरा असर पड़ता है । अरब तथा इजराइल के युद्ध के दौरान सन् १६५६ तथा १६६७ में नहर को बन्द भी किया जा चुका है ।

प्र० : पुल का निर्माण कब हुआ तथा किसने किया ? प्रेमचन्द प्रसाद, सिवान

उ० : पानी के बड़े-बड़े समूह पार करने के लिए पुल का निर्माण सबसे पहले प्रकृति ने स्वयं ही किया था तो मानव पानी समूह

को पार करने के लिये पुल का प्रयोग करते थे चाहे ये पुल प्रकृति द्वारा गिराये गये बड़े बड़े पेड ही थे जिनकी सहायता से नदी और नाले पार किये जाते थे । इस प्रकार प्रकृति द्वारा निर्मित पुलों की नकल में ही मानव ने भी पुल बनाने आरम्भ किये । अनुमान है कि शुरू में मनुष्य ने भी बड़े-बड़े पेड़ों को गिरा कर नदी और नालों के पुल बनाये होंगे । परन्तु धीरे-धीरे नदियों के बीच पत्थरों के ढेर लगा कर उन पर इन पुलों को ऊपर उठाया । इस प्रकार शहतीर के पुल बनने आरम्भ हुए जिनका आधार पत्थरों के ढेर नुमा खम्बे पर होता है ।इसमें ही कम गहरी चौडी नदियों के बीच पत्थरों के ढेर लगा कर कई खम्बे बना कर पुल बनने लगे । इसके बाद मोटी पतली लकड़ियों को साथ-साथ बिछा कर, उन पर आड़ी पतली लकड़ियों से फ़र्श बना कर लकड़ी के गरडर पुल बने । इस प्रकार के पुल बनाने का अभी भी काफ़ी चलन है । ऐसे पुल की लम्बाई अधिक नहीं होनी चाहिये, परन्तु यदि नदी में खम्बे बनाये जा सकते हों तो इस पुल की लम्बाई को कितना भी बढ़ाया जा सकता है ।

हर पुल के दो भाग होते हैं ऊपरी हिस्सा व नीचे का हिस्सा. इस भाग का पुल की मजबूती में विशेष हाथ होता है । यदि नदी के बीच बने खम्बों की नींव तथा खम्बे मजबूत न हों तो पुल के बह जाने का अंदेशा बना रहता है क्योंकि अधिक पानी आने पर इस भाग पर पानी का दबाव बढ़ जाता है । खम्बों को मजबूत बनाने के लिये खम्बों की नींव की खुदाई पानी की सतह के नीचे ठोस भूमि तक की जाती है । और इसके लिये कभी-कभी बहुत गहरी खुदाई भी करनी पड़ती है, उदाहरण के लिए मिसौरी में स्थित मिस्सिपी नदी के पुल की नींव १३५ फुट तक खुदी हुई है । इसी प्रकार ओकलैंड तथा सेनफ्रान्सिस्को के ट्रान्सबे पुल की नींव २३५ फुट गहरी खुदी हुई है ।

संसार का सबसे बड़ा कैन्टीलिवर पुल, (१८०० फुट लम्बा) कैनेडा में है । एक और प्रकार के लटकने वाले पुल भी कहीं कहीं बनाये जाते हैं । इस पुल में लोहे के मोटे तथा मजबूत रस्सों को नदी के दोनों ओर मज़बूती से लगाया जाता है, तथा पुल इन रस्सों के सहारे बनाया जाता है । ऐसा एक प्राचीन पुल भारत में गंगा नदी पर लक्ष्मन झूलें के नाम प्रसिद्ध है ।

प्र० : स्टील धातु क्या है और कैसे बनता है ? राजेश कृष्णदास, पूर्णिया, बिहार ।

उ० : धातु एक खनिज है जो कि पृथ्वी के भीतर से निकाली जाती है । कुछ धातुए अपने शुद्ध रूप में, तथा अधिकतर धातुए दूसरे तत्वों में मिश्रित रूप में जाती हैं । बाह्य निकाली रूप से धातु का तत्व है जो कठोर तथा चमकीला होता है तथा विद्युत संचार के लिए अच्छा होता है ।

शुद्धरूप में धातुओं में कई अवगुण होते हैं इनको निकालने के लिए इनमें दूसरी धातुओं को मिश्रित कर मिश्रधातु बनाई जाती है । ये मिश्रधातु असली धातु के अवगुणों से रहित होती हैं । उदाहरण के लिए आधुनिक प्रयोग में आनेवाली मिश्र-धातु है, चाँदी, सोने के सिक्के, ऐल्मिनियम के बरतन इत्यादि । लोहा अपने शुद्ध रूप में नरम होता है तथा प्रयोग में आने के लिए इतना उपयुक्त नहीं होता । इस लिए लोहे में कारबन (जो कि धातु नहीं है) को मिला कर मजबूत मिश्रधातु स्टील प्राप्त की जाती है । स्टेनलैस स्टील भी इसी प्रकार लोहे तथा क्रोनियम को मिला कर बनाया जाता है । इस मिश्रधातु में क्रोनियम का दाग न लगने का गुण प्रधान होता है ।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

हिन्दी भाषा में

नए दीवाने प्रयोग

ग्राजकल हमारे चारों तरफ जो हो रहा है उसमें हिन्दी भाषा के लिए समृद्धि का नया मसाला भरपूर मात्रा में मिल सकता है। दर्जनों नई कहावतें, मुहावरे तुक्के, तीर, लटके, फिकरे ग्रौर बोल गढ़े जा सकते हैं। जरा एक मनोरंजक नमूना चख कर देखिये। यहां हम दस नग दे रहे हैं।

नीना, तुम्हारे वह कल कनॉट प्लेस में एक लड़की के साथ हाथ डाले घूम रहे थे। सुरेश राम बने फिर रहे थे। तुझे कुछ खबर ही नहीं?
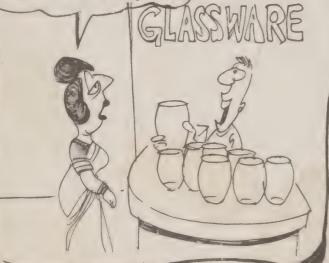
मैं भी देख लूंगा।

नहीं देता तुझे ग्रपनी लड़की। जा-जा. कर ले जो करना हो। बुला ले किसान सम्मेलन।

एक बार कह दिया कि दफ्तर में ओवर टाइम करके आ रहा हूं। तुम्हें यकीन नहीं तो क्या करूं? अब क्या शाह कमीशन बिठाओगी?
क्या? आज तूने साबुन की चक्की को मक्खन समझ डबल रोटी के साथ खा लिया? हा हा हा हा हा यार तू आदमी है या मनीराम बागड़ी?
भौंक-भौंक कर कान खा गया। अपने आपको बड़ा राजनारायण समझ रहा है।
HISSS
सीधी तरह चल वरना मार-मार कर चरणसिंह बना दूंगा।
शाबास! मेरा आशीर्वाद है तुम्हारा यश व धन ऐसे ही बढ़े जैसे देसाई सरकार के राज में कीमतें बढ़ती हैं।
बगैर हाथ-पैर का आदमी? यह दिल्ली पुलिस में भर्ती करने लायक है।

शर्त

—डा० तरुणचन्द्र जैन

'जो हां, उनका असली नाम है सदाकत हुसैन। उम्र होगी यही कोई ४५ और ५० के बीच और धंधा है लकड़ियों की टाल। यूं उन्हें शहर के ज्यादातर लोग जानते हैं। मगर मैं शर्त लगा सकता हूं अगर कोई सदाकत हुसैन के नाम से उनका पता बता दे तो। उनका असली नाम, या तो अर्से पहले मदरसा के रजिस्टर में दर्ज

था, मगर उनके मौलवी साहब और रजिस्टर न जाने कब के खुदा को प्यारे हो चुके हैं; या फिर है जनगणना या चुनाव की लिस्ट में। पिछले चुनाव में असली नाम ने वो तमाशा कराया कि पूछिये मत। जैसे ही सदाकत मियां बोट डालने गये अफसर ने जोर से नाम पढ़ा 'सदाकत हुसैन।'

एक एजेंट ने कहा, 'ये सदाकत हुसैन नहीं हैं।'

और साहब कोई इन्हें सदाकत हुसैन तसदीक करने को तैयार ही नहीं था। पटवारी भी अपने दिमाग पर बहुत जोर डालने के बाद इन्हें सद्दन मियां के नाम से ही याद कर सका। वो तो अल्ला के फजल से पटवारी ने इनकी वल्दियत ऐन मौके पर तसदीक कर दी वरना उस दिन तो सचमुच गजब हो जाता।

दरअसल सदाकत हुसैन अपने मां-बाप की अकेली औलाद थे तो वे इन्हें प्यार में सद्दन मियां कहने लगे थे। मगर यह नाम भी आधी जिन्दगी तक ही उनका साथ दे पाया, और एक दिन सद्दन मियां वकील साहब बने सो बने। अब तो आप किसी रिक्शे वाले से कह दो 'वकील साहब के पहुंचादो' तो शहर का बड़े से बड़ा वकील धरा रह जायेगा और वह आपको उर्दू मिडिल फेल सद्दन मियां की टाल पर जा छोड़ेगा।

सद्दन मियां वकील साहब कैसे बने इसकी भी एक दास्तान है। इनके बड़े साहब जादे उस समय थे तो १०-१२ साल के मगर शरारतों में बड़ों-बड़ों के कान काटते थे। 'गुमशुदा की तलाश' में अपना फोटो व नाम छपवाने की नियत से दो बार घर से भाग भी चुके थे। उस दिन भी दूसरे मुहल्ले में कुछ हरकत कर बैठे। एक साहब उसका हाथ पड़क कर ले आये और लगे जोर-जोर से आवाज लगाने 'सद्दन मियां, नीचे आओ। अपने लौंडे को सम्भालो वरना...।'

सद्दन मियां दौड़कर आये और पिल पड़े उससे बहस करने, 'क्या कमाल कर रिये हो। छोकरे का हाथ क्या जड़ से उखाड़ोगे? ये कोई तहजीब है, किसी के लड़के को लौंडा कहे जा रिये हो।'

वो साहब भी क्यों चुप रहते, बोले, 'अब बड़ा दर्द हो रहा है! जब तुम्हारे लड़के ने दूसरों के बच्चों को गालियां दीं और मारा तब?'

हमेशा खामोश रहने वाले सद्दन मियां को पता नहीं आज क्या हो गया था? चुप ही नहीं हो रहे थे। बोले, 'मैं तो समझता था आप समझदार और शरीफ इन्सान हैं। मगर आप तो कमाल की बात कर रिये हैं। मेरा लड़का मुझे तो न कभी गाली देता है, न कभी मारता है। उसे कोई पागल कुत्ते ने काटा है जो आपके बच्चों को खामखा गालियां दीं और मारा। ये कोई मानने वाली बात है। कमाल है...। हुं...। आपके बच्चों ने ही गालियां दी होंगी तो मुमकिन है इसे भी ताव आ गया हो।'

वहस में सद्दन मियां से जीतते न देख, वे साहब बड़बड़ाते हुए वापस चले गए। मगर सद्दन मियां को उस रोज से बहस का ऐसा रोग लगा कि पूछिए मत। लोगों ने शुरू-शुरू में उनसे मजाक में वकील साहब कहना प्रारम्भ किया, पर धीरे-धीरे उनका असली नाम लोग भूल ही गए। खुद सद्दन मियां भी उसी दिन से काली अचकन भी पहिनने लगे, सफेद पायजामा तो पहले से ही पहिनते थे।

तब से किसी ने उन्हें बहस में हारते नहीं देखा, मगर कुछ दिन पहले गड़बड़ हो गई। हुआ यों कि वकील साहब भोपाल से रायपुर जा रहे थे। छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस में उन्होंने देखा कि एक बर्थ सदाकत हुसैन के नाम से रिजर्व है। बस जा पसरे उस बर्थ पर बड़े इत्मीनान के साथ। इतने में दूसरे सदाकत हुसैन, जिनके नाम बर्थ वाकई रिजर्व थी, आ गए। किसी को बर्थ पर कब्जा जमाए देखकर कन्डक्टर को ले आए।

कन्डक्टर ने सदाकत हुसैन उर्फ वकील साहब से बर्थ खाली करने को कहा तो भिड़ गए, 'आप भी कमाल कर रिये हो मियां। ये बर्थ सदाकत हुसैन के नाम बुक है और मैं सदाकत हुसैन हू।'

'आप होंगे सदाकत हुसैन, मगर यह बर्थ आपकी नहीं है। आप...'

कन्डक्टर की बात काटते हुए सदाकत मियां बोले, 'हाँ-हाँ मेरी नहीं है पर किसकी है? भारतीय जनता की न। क्या मैं भारतीय जनता नहीं हूं?'

अब की बार कन्डक्टर को भी गुस्सा आ गया। वह डांटकर बोला, 'आप उतरते हैं कि पुलिस को बुलाऊं।'

'मियां धमकी दे रिये हो, जैसे मैंने खाकी वर्दी वालों को देखा ही न हो।' फिर बड़ी शान से बात आगे बढ़ाई, क्या समझ रखा है! पूरा खानदान पुलिस में है। मेरे चचाजात भाई दिल्ली में डी० आई० जी० है, नीचे मियां [illegible] में एस० पी०...।'

बड़ी समस्या थी। पर कन्डक्टर ने एकदम नर्म पड़ते हुए कहा, 'आल राइट,

मदहोश

मियां सदाकत हुसैन मेरी एक शर्त है, अगर आप उसे पूरी कर दें तो मैं आपको बर्थ दे दूंगा ।'

सदाकत मियां ने तर्क किया, 'वाह, मैं बिना सुने आपकी शर्त मानने का वायदा कैसे कर लूं । पहले कुछ सुनूं भी तो । आप कहने लगें कि मैं चलती गाड़ी से कूद जाऊं तो···।'

'नहीं-नहीं सदाकत मियां ।' कन्डक्टर ने हंसकर कहा, 'ऐसी कोई बात नहीं है । वैसी ही शर्त है जैसी आपकी है, गोया नाम वाली ।'

'ठीक है, मुझे मंजूर है ।' कहकर सदाकत मियां ने कन्डक्टर के हाथ पर हाथ पटक दिया ।

अब कन्डक्टर ने अपने कोट पर लगी नाम की पट्टी की ओर इशारा करके पूछा 'इस पर क्या लिखा है ।'

सदाकत मियां बोले, 'मेरा इम्तहान ले रिये हो । मैंने भी बड़ी अंग्रेजी पढ़ी है । इस पर लिखा है कालिस ।'

'हां, कालिस' कन्डक्टर ने कहा, 'ये मेरा ही नाम है । आपको मालूम है न अमेरिका के जो लोग पहले पहल चांद पर पहुंचे थे उनमें कालिस भी एक था ।'

सदाकत मियां को लगा कि लोग ये न समझ लें कि मुझे कुछ मालूम नहीं है, इसलिए झमक कर बोले, 'हां-हां था । ये बात तो बच्चा-बच्चा जानता है ।'

'यही तो मैं भी कह रहा हूं ।' कन्डक्टर बोला, 'तो आप मुझे केवल एक बार चांद पर भिजवा दीजिए, मैं आपको बर्थ दिये देता हूं ।'

सदाकत मियां को बड़ा अजीब लगा बोले, 'क्या कमाल कर रिये हो मियां, केवल कालिस नाम होने पर आप चांद पर कैसे पहुंच पायेंगे । नाम एक-सा होने से क्या होता है ? वो दूसरा सख्श है आप दूसरे ।'

कन्डक्टर तो मौके की तलाश में था ही, बोला, 'यही तो मैं भी कह रहा हूं, नाम एक-सा होने से क्या होता है । सीट दूसरे सदाकत हुसैन के नाम रिजर्व है और आप दूसरे सदाकत हुसैन हैं ।'

शर्त हारने के बाद वकील साहब के सामने सामान समेटने के अलावा कोई चारा न था । ●

नेता-स्वभाव

—आबाद रामपुरी

जाइ,
कहां,
सत्ता मन भाई,
जैसे उड़,
कुर्सी की चिड़िया,
फिर कुर्सी पर आई ।
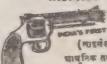
सवाल यह है ?

टेलीफोन आने पर
मन में खुशी के लड्डू
तो फूटते ही हैं,

पर अपना सर फोड़ने को
कब जी करता है ?

सुनिये जी, आप हमारे यहां डांस की फ्री ट्रेनिंग लेना चाहें तो हमारे पास एक स्कीम है···

देखिये, आपके घर के सामने दमड़ी लाल जी रहते हैं। उनकी पत्नी से कहिये, उनके लल्ला के कपड़े मिल गये हैं। आप बस जरा हाथ उठा कर खिड़की में से इशारा कर दीजिए। वह समझ जाएगी।

क्यों भाई साहब, क्या आप मेहरबानी करके अपने हाथ का काम छोड़कर हमारे शान्तिवार्ता सम्मेलन में भाग लेने आ सकते हैं।

मैं आपका पड़ौसी कपूर बोल रहा हूं।
क्या बात है, फोन उठाने में इतनी देर कर दी ? क्या दिन में भी सोते रहते हैं आप ? देखिये, आपका नया दीवाना आ गया हो तो मुझे दे जाइए। दो दिन बाद जब भी आप हमारे यहाँ आयेंगे। मैं लौटा दूंगा।

समुद्र मे एक ऐसी मछली मिलती है जिसकी आखें दो लम्बी धागे जैसी भुजाओं पर लगी होती हैं।

एक प्रकार के केकड़े घुसपैठियों का काम करते हैं। वह घोंघे के खोल मे जबरदस्ती घुस जाते हैं। घोंघे को खा जाते हैं और स्वयं मजे से उसमें रहना शुरू करते हैं।

लय की पहाड़ियों में उड़ने वाली गिलहरी मिलती है। र के दोनों ओर लटकते चमड़े के कालम पंखों का काम देते हैं।

समुद्र में मडस्किपर नाम की मछली पानी में डूबे पेड़ की जड़ों से होते हुये पेड़ पर चढ़ जाती है।

व बर्र अपने छत्ते सचमुच ही कागज के बनाते हैं। ड़ी को चबा कर उस लुगदी से बना यह छत्ता रफ पेपर का होता है।

रेगिस्तान मे पायी जाने वाली एक छिपकली खतरा दीखने पर रेत में घुस जाती है और रेत में सतह के नीचे-नीचे तैरती रहती है।

स्किवड दुश्मन नजर आने पर स्याही की फुहार छोड़ती है। उसके चारों ओर पानी दूर-दूर तक रंगदार हो जाता है और दुश्मन को वह नजर नहीं आती।

शिक्षा—सचाई गप्पों से भी ज्यादा आश्चर्यजनक होती है।

दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल–पहला इनाम ३०
कैमल–दूसरा इनाम २०
कैमल–तीसरा इनाम १०
कैमल–आश्वासन इनाम ५
दीवाना-आश्वासन इनाम
कैमल–सर्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामिल हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दीं
रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... उम्र ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: ११-११-७८

CONTEST

आत्मा ने एक लम्बी और और बोली—

''मैं मरने के बाद भी आज एक आत्मा के रूप में आज-ही हूं''और मैं उस समय हूंगी जब तक मुझे तुम्हारा जाएगा''चाहे इसके लिए जन्म लेकर क्यों न इस धरती ..'

रचना की आत्मा की ओर ई हुई आवाज में बोला—

ुम मुझे इतना पत्थर दिल क में सब कुछ जानने के बाद नहीं करूंगा ?'

!!' रचना की आत्मा की पा गई।

ना''रानी की कृतघ्नता का स जन्म में पता चल गया होता तभी एक-दूसरे के हो चुके मुझे पता चल जाता कि प्यार मन में जन्म ले या मर्द के र वही सफल और सच्चा होता -पत्नी से करे और पत्नी—पति पति-पत्नी के प्यार में इतनी ी तो यह सम्बन्ध जब से दुनिया आज तक इतना दृढ़, इतना पवित्र और इतना अटूट न चना, यह उसी सम्बन्ध की तुम एक आत्मा के रूप में भी न की राह देखती रही हो'' विश्वास था कि मैं एक-न-एक ाऊंगा।'

मी''मुझे पूर्ण विश्वास था।' ावाज खुशी से थर-थर कांप

र आओ—रचना''आओ''' ग जाओ''मेरे सीने से लग ा में अपने पवित्र सम्बन्ध की र कहता हूं कि तुम्हें इतना तना प्यार दूंगा कि कभी किसी पत्नी को नहीं दिया होगा।'

ुम''सच कहते हो नाथ ?'

ना''मेरे पास आओ''।'

रचना की आत्मा रो पड़ी। ों हाथ फैलाकर उसकी ओर ा''

'आओ रचना''आओ''तुम रो क्यों रही हो ? आज की रात रोने की रात नहीं —आज हमारे मिलन की रात है''पुनर्मिलन की रात''।'

रचना पीछे हटते हुए बोली—

'ठहर जाओ स्वामी''ठहर कर मेरी बात सुन लो।'

'नहीं रचना''मैं अब तुमसे दूर नहीं रह सकता।'

'स्वामी—!'

'रचना—मेरे गले लग जाओ रचना।'

'स्वामी''मेरी बात तो सुनो''स्वामी।'

रचना पीछे हटते हुई दीवार में गुम होती चली गई''दशरथ के दोनों हाथ दीवार से टकरा गए''और वह चौंककर इधर-उधर देखता हुआ बोला—

'रचना ! तुम कहां चली गई रचना ?'

'स्वामी—मैं यहां हूं।'

दशरथ रचना की आवाज की ओर मुड़ा। रचना एक स्तम्भ के पास खड़ी थी और उसकी आंखों में आंसू कांप रहे थे। दशरथ ने बेचैनी से कहा—

'रचना ! तुम मेरे पास क्यों नहीं आतीं ?'

'पहले मेरी बात तो सुन लो मेरे देवता''।'

'आओ रचना''मैं अधिक देर तक तुमसे दूर नहीं रह सकता।'

'मैं जानती हूं नाथ। रचना भारी आवाज में बोली, 'मुझे मालूम था कि मेरी तपस्या विफल नहीं जाएगी और तुम इस जन्म में अवश्य मुझे एक पत्नी का प्यार और उसका अधिकार दोगे नाथ''लेकिन अभी हम दोनों के मिलन के बीच एक बहुत बड़ी रुकावट है—'

'रुकावट ?'

'हां—मेरे स्वामी।'

'लेकिन क्या ?'

'तुम्हारा यह शरीर—।'

'क्या ?'

दशरथ हड़बड़ा गया। रचना की दुःख भरी आवाज उभरी।

'हां, मेरे देवता''अब मैं तुम्हारी तरह कोई इन्सान नहीं हूं जिसे छू सको''सीने से लगा सको''मैं एक आत्मा हूं''आत्मा जो हवा होती है''जो पकड़ी नहीं जा सकती''।'

दशरथ सन्नाटे में खड़ा था''रचना ने फिर कहा—

'अब मेरे तुम्हारे मिलने का एक ही ढंग है''और वह यह कि तुम भी यह नश्वर शरीर छोड़कर एक आत्मा का रूप धारण कर लो''।

'नहीं—।' दशरथ हड़बड़ा गया।

'मैं जानती हूं नाथ''तुम्हारे लिए यह बहुत मुश्किल है क्योंकि इस दुनिया में तुम अकेले ही नहीं हो तुम्हारी एक मां भी है और तुम्हारी मां का तुम्हारे अतिरिक्त कोई सहारा नहीं''अगर तुम शरीर त्यागकर मुझसे आन मिलोगे तो तुम्हारी मां का क्या होगा ?'

'हां रचना, यह सच है''मेरी मां का मेरे अतिरिक्त इस दुनिया में कोई नहीं और वह मुझे बहुत प्यार करती है''उसने मेरा भविष्य बनाने के लिए अपना तन-मन न्योछावर कर दिया है''आज वह बहुत बड़ी बीमारी का शिकार है''अब मेरा कर्त्तव्य है कि मैं उसकी सेवा करूं।'
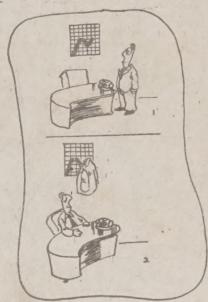
'मैं जानती हूं नाथ''तुम्हारे इस जन्म की मां तुम्हारे पिछले जन्म की मां है और बापू के समान स्वार्थी नहीं है—तुम्हारी इस मां ने तुम्हारे लिए अपनी पूरी जवानी विधवापन में गुजार दी है''इसीलिए अब तक मैंने तुमको शरीर के बन्धनों से मुक्त नहीं किया था।'

(क्रमशः)